जल संरक्षण

के लिए

कुछ काम की बातें

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
रुड़की-247667

हमारी सभी समस्यायें.....

राष्ट्रीय जल संसाधन परिषद की पहली बैठक का उद्घाटन करते हुए प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने कहा "हमारी लगभग सभी समस्याएं जल के इर्द गिर्द घूमती रहती हैं। जल एक ऐसा संसाधन है जिसका सर्वाधिक उपयोग हम अभी तक नहीं कर पाए हैं। जल के प्रति कोई भी जिम्मेदारी की भावना नहीं दिखाई देती है। अक्सर किसान अपने खेत को जरुरत से ज्यादा पटाता है जिसके चलते खेत में पानी जम जाता है। नहरों को काट कर और पड़ोसियों के खेतों से वह पानी चुरा लेता है। शहरों में नल खुले छोड़ दिये जाते हैं। बहुत सारी जगहों में पानी के नल भी नहीं हैं। दरअसल पानी को बर्बाद नहीं करना ही समस्या का समाधान है.....।" निस्सन्देह बहुमूल्य जल संसाधन के बेहतर उपयोग और संरक्षण के लिए अधिक नियोजन और विकास कार्यों की आवश्यकता है।

बढ़ती मांगें.....

सभ्यता के बढ़ने के साथ, इंसान की जल की आवश्यकता भी बढ़ गई है। वर्ष २००० तक देश की आबादी १ अरब तक पहुंच जाने की आशा है। एक आकलन के अनुसार, अगले दो दशकों में जल के विभिन्न उपयोग दुगने हो जाएगें। वर्ष २००० तक २३ करोड टन अनाज की आवश्यकता हो जाएगी जो अभी के उत्पादन से लगभग दुगनी है। देश की लगभग सारी कृषि योग्य भूमि पर खेती की जा रही है, अत: कृषियोग्य भूमि बढ़ाकर कृषि उत्पादनों में वृद्धि की उम्मीद बिलकुल कम है। जिन सम्भव उपायों से हम कृषि उत्पादन को बढ़ा सकते हैं, वे हैं, कृषि प्रौद्योगिकी में सुधार, विस्त्रित और सघन सिंचाई के तरीके, और सर्वापरि जीवन के सभी क्षेत्रों में **जल का संरक्षण**।

* बार बार न पटाएं। बहुत ज्यादा पानी से पौधों में बीमारियां हो सकती हैं। टाइमर की सहायता से पटवन का समय तय कर लें।

* यदि सम्भव हो तो पानी के बेहतर उपयोग के लिए छिड़काव यन्त्र (स्प्रिंकलर) का प्रयोग करें।

* अपने लान के विभिन्न पौधा प्रजातियों के जल उपयोग गुणधर्मों को जानने की कोशिश करें।

* लानों को चट्टानों, कंकड़ों, लकड़ी के टुकड़ों या अन्य वस्तुओं से भी सजाया जा सकता है। इन्हें घास की जगह लगा सकते हैं और पटाने की भी जरुरत नहीं रहती।

सार्वजनिक स्थानों पर .....

* सार्वजनिक स्थानों पर लगाए नलकों को बन्द करने की आदत डालें।

* जल वितरण प्रणाली में कहीं लीक दिखाई देने पर स्थानीय निकायों को इसकी सूचना दें।

* सार्वजनिक स्थानों पर जल की टोंटियां खुद बन्द होने वाली किस्म की हों।

* सार्वजनिक स्थानों पर पानी से न तो स्वयं खेलें और न ही बच्चों को नलकों से खेलने दें।

* सार्वजनिक स्थानों पर अत्यधिक दबाव आपूर्ति न दें। कम दबाव में कम पानी भी आए तो काम चलेगा।

* सार्वजनिक सुविधाओं के स्थानों पर पानी का नियमित प्रवाह कम किया जा सकता है।

* स्थानीय निकाय अवश्य ही नियमित रुप से जल वितरण प्रणाली की जाँच करें।

* चोरी से बचाने के लिए, सार्वजनिक स्थानों पर सस्ते, नही बेचे जाने लायक प्लास्टिक के नलके लगाएं।

* पानी के लीक करने की समस्याओं के निपटारे के लिए अधिक संख्या में उपकेन्द्रों के होने से संरक्षण हो सकता है।

* पानी को बचाने से सम्बन्धित हिदायतें सार्वजनिक स्थानों पर लगाएं।

खेतों में .....

* फसलों के उपयोग और अन्य सम्बन्धित हानियों के आधार पर सिंचाई का हिसाब लगाएं।

* पटवन समय का पता लगाने के लिए मिट्टी की नमी बतलाने वाले यन्त्र का उपयोग करें।

* फसलों के बढ़ने के विभिन्न चरणों के अनुसार पानी की डेलीवरी दरें तय करें।

* खेत में आने वाले पानी को सही तरीके से मापने के लिए सही प्रमापियों का प्रयोग करें।

* फसलों की वृद्धि के महत्वपूर्ण चरणों को सुनिश्चित करके सिंचाई का कार्यक्रम तय करें।

* स्थानीय मिट्टी, जलवायु और फसल को ध्यान में रखते हुए समुचित सिंचाई प्रणाली का चुनाव करें

* सिंचित खेतों के पास जमा पानी के उपयोग की प्रणाली बनाए।

* सिचाई के पानी के बराबर वितरण के लिए खेतों को समतल बनाएं।

* ऐसी सिंचाई प्रणाली अपनाएं जिससे भूसतह पर प्रवाह, खेतों में जल जमाव, खेतों के आर पार अधिक धीमी या तेज गति से पानी का जाना, पौधों या मिट्टी की सतहों पर लवण का जमा हो जाना या वितरण के चलते पानी की बर्बादी को रोका जा सके।

* सिंचाई के गड्ढ़ों से खरपतवार आदि निकाल दें।

* इस बात को सुनिश्चित करें कि डेलिवरी तंत्र में वनस्पति और टूट फूट न हो, किनारे मजबूत और काम के योग्य हों तथा उनमें चूहों के छेद न हों।

* स्प्रिंकलर से तेज हवा या गर्मी के दिनों में सिंचाई न करे। बेहतर हो कि रात में करें।

* जोड़ों, कप्लिगों आदि को सही तरीके से कस दें ताकि लीक न हो।

* सिंचाई के मौसम के शुरु होने के पहले ही सिंचाई प्रणाली में आवश्यक मरम्मत कर लें।

* नहरों की लाइनिंग के लिए स्थानीय सामग्री का इस्तेमाल करें।

* फसलों में दैनिक जल उपयोग की जानकारी लेने के लिए स्थानीय कार्यालयों से सम्पर्क करे और उसी के अनुसार पटवन के कार्यक्रम बनाएं।

* सिंचाई जल उपयोग मात्रा और बीच बीच के अन्तरालों का रिकार्ड रखें ताकि भविष्य में उनका उपयोग हो सके।

* अत्यधिक सिंचाई से अच्छे परिणामों के बदले फसल नष्ट हो जाबे हैं।

* नहरों को तोड़े नहीं। इससे पूरी वितरण प्रणाली में बाधा पड़ती है।

* कपड़े और बर्तन तभी धोएं जबकि वे पूरी इकट्ठी हो जाएं।

* आवश्यकता के आकारों में गीजर, धुलाई मशीन जैसी घरेलू मशीनरी लें।

* काफी या चाय के लिए जितनी जरूरत हो उतना ही पानी उबालें।

* खाना बनाते समय खाना पकाने के बर्तनों को धोने के लिए पैन के पानी का इस्तेमाल करें, टोटी नहीं खोले। इस पानी का दूसरा इस्तेमाल करें।

* टोंटी खोल कर पानी से सब्जी धोने के बजाए पानी के छोटे पैन का उपयोग करें।

* खाना पकाने में कम से कम पानी का प्रयोग करें। ढक्कन कस कर लगाएं।

* टोंटी के वाशर को लगाना सीखें ताकि पानी नहीं चू सके।

* जल संरक्षण की बात हमेशा ध्यान में रखें और घरेलू उपयोग में पानी को बचाने के अन्य तरीके सोचें। अपने पानी के मीटर की नियमित देख रेख करें और यदि मीटर में सामान्य से अधिक पानी का उपयोग मालूम होता है तो पता लगाएं कि ऐसा क्यों हो रहा है।

* बिलकुल सवेरे अपने लान पटाएं ताकि पानी अधिक वाष्प बनकर न उड़े।

* तेज हवा के दिनों में जहां तक हो सके, लान नहीं पटाएं। अच्छी नमी के लिए धीरे धीरे पटाएं।

* वाहन मार्गों या गलियों में पटवन के पाइप खुला न छोड़े।

* आपके लान के घास को कब पानी चाहिए, यह समझना सीखें।

जल का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों जैसे घरों, मवेशियों, कृषि और उद्योग में होता है। विभिन्न क्षेत्रों में जल के उपभोग को कम करने के कुछ आसान उपाय इस प्रकार हैं :-

घरेलू उपयोग में.....

लगभग १०% नागरिक जल का उपयोग घरेलू कामों में होता है। संरक्षण के कुछ उपाय इस प्रकार हैं

* अपने जल उपयोग को समझने के लिए पानी के मीटरों को पढ़ने की आदत डालिये। सभी टोंटियों को बन्द कर लीकों की जांच करें।
* टोंटियों, शौचालयों, नलों, कमोड टैंकों में लीकों की जांच कर उनकी मरम्मत करें।
* शौचालय का इस्तेमाल बाथरूम कूड़ाघर के रुप में न करें।
* पानी के बहाव को बन्द करने के लिए शौचालय के टैंक फ्लोट को कस दें।
* कम शावर से नहाएं। साबुन लगाते समय नल बन्द कर दें और कपड़े खंगालते समय खोलें।
* ब्रुश करते समय नल तभी खोलें जब कुल्ला करना हो।
* हाथों को धोने में साबुन लगाने और रगड़ने के समय नल बन्द कर दें और धोने के समय खोल दे।
* दाढ़ी बनाते समय टोटी खोलने के बजाए बेसिन में पानी भर लें।
* बाथ टबों को कम भरें और बच्चों को नहलाने में पानी का फिर से उपयोग करें।
* कपड़े धोने के पानी का इस्तेमाल फर्शों को रगड़ने और अन्य सफाई के कामों में करें।

* फसल वृद्धि की अनिवार्य बातों को जानने की कोशिश करें।

* स्प्रिंकलर या ड्रिप सिंचाई प्रणालियों में साफ पानी का प्रयोग करें।

* उर्वरकों का प्रयोग करें ताकि फसलों को सिंचाई जल से सर्वाधिक लाभ मिल सके।

* हमेशा जल संरक्षण की बात ध्यान में रखें और यथासम्भव पानी की बर्बादी कम करें।